१०७. मानव ही संतुलन, स्वराज्य का कामना करता है

०६-१०-२०१३

मानव ज्ञानावस्था में होने के प्रमाण में जागृति के अर्थ में संतुलन को चाहता है | संतुलन चारों अवस्था के साथ ही होता है | इससे हम यह कल्पना कर सकते हैं, कोई भी धरती पर मानव होता है उसके पहले से यह तीनों अवस्था हो जाता है | इस धरती पर चारों अवस्था देखने को मिला है; जिसमें से तीन अवस्था मानव के पहले से ही तैयार है | नियति विधि सर्वत्र समान रूप में वर्तमान है | सभी धरती पर नियति विधि से ही विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति पूरा होता है; जिसमें से विकास क्रम-विकास में ही चारों अवस्था तैयार होता है | रचना-विरचना क्रम में भौतिक, रासायनिक वस्तुएं प्रयोजित हुए रहते हैं | जीवन वस्तु दृष्टा पद में रहता है | मानव का अध्ययन से पता लगता है कि जीवन दृष्टा पद में है | यह मानव में ही स्पष्ट है | जीवावस्था आहार, निद्रा, भय, मैथुन तक ही रह गया | मानव इससे मुक्त होकर जीना चाहता है; फलस्वरूप में जीवों से अच्छा जीने के लिये संवेदना को अपनाया |

संवेदनाओं को पुनः आहार, निद्रा, भय, मैथुन में प्रयोग करना ही भ्रम और अपराध का कारण हुआ | यह ज्ञानावस्था की विशेषता रही | अभी तक मानव जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया, उसमें सफल हो गया | जैसा मानव जीवों से अच्छा जीने के लिये अच्छा मकान, अच्छा खाना, अच्छा सड़क, सेतु, महासेतु सब पा गया, रास्ता पा गया | ये सब पाकर जीवों से अच्छा जी गए ऐसा मानते हैं | जीने की विधि से जीवों के सदृश ही है | सोचने की विधि से अच्छा लगता है | जीना ही प्रमाण है | सोचना प्रमाण नहीं है | जब तक प्रमाण नहीं होता है, तब तक कल्पना है | प्रमाण सम्मत कल्पना स्वीकार होता है | कल्पना विधि से मानव जीवों से अच्छा जीना ही मानता है | जबकि सामान्य मनुष्य के जैसा सोचा जाय, आहार आदि चार विषयों के साथ ही जीता है, जिसमें से कुछ भाग को वर्जित करना ही महानता का कारण है, महानता का स्वरूप, महानता का प्रयोजन है। इस प्रकार से महानता का मूल्यांकन करते हुए मानव महान होने के लिये प्रयत्न करता है |

इससे सभी समुदाय में महान होने का प्रयत्न जारी है | महानता का मतलब में अभी तक चमत्कार को माना जाता है | चमत्कार तप से आता है, मानते हैं | हर समुदाय में चमत्कारिता को नमस्कार है | इस क्रम में चलता हुआ मानव शनैः शनैः सोचते-सोचते सच्चाई तक पहुँचता है | यही विधि सभी धरती पर होना सम्भव है | इसी आधार पर यह कहा गया है | किसी धरती में विकसित चेतना सम्पन्न मानव, विकसित चेतना के लिये प्रयत्नशील मानव, विषयों से ग्रसित मानव के रूप में परिशीलन किया जा सकता है | विषयों में प्रवृत्त मानव, विषयों से दग्ध रहता है | विषयों का दृष्टा बनना ही उसका प्रयोजन को समझना है, ज्ञान है, ज्ञान का भाग है अथवा ज्ञान का महत्वपूर्ण भाग है | इस क्रम में चलता हुआ मानव इस धरती पर विकल्प को पा गया है | विकल्प विधि से जागृत चेतना का अध्ययन सुलभ हो गया है |

जागृत चेतना ही प्रमाण रूप में प्रस्तुत होकर सार्वभौमता को प्रमाणित करता है | सार्वभौमता चारों अवस्था में संतुलन; मानव परम्परा में परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था रूप में, जीवावस्था में जीने की आशा के रूप में, प्राणावस्था में पुष्टि के रूप में, पदार्थावस्था में अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होता है; जिसको देखने से पता चलता है, पदार्थावस्था नित्य वस्तु है | नित्य वस्तु का मतलब निरंतर रहने वाला | मनुष्य ही इसका कर्ता धर्ता होता है | साथ में भोक्ता होता है | अस्तित्व में होने की व्यवस्था बनी

हई है | इसी का नाम नियति है | नियति विधि से सब कुछ वर्तमान है | नियति स्वयं में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है | सत्तामयता, जहां प्रकृति है वहाँ है ही; जहाँ प्रकृति नहीं है, वहाँ भी है | जहाँ प्रकृति नहीं है, वहाँ प्रकृति पहुँचने पर प्रकृति क्रियाशील रहता ही है | इस प्रमाण विधि से विश्वास किया जाता है कि प्रकृति सत्ता में नित्य क्रियाशील है | ये क्रियाशीलता सत्ता में प्रकृति डूबे, भीगे, घिरे रहने से है | यही अनुसंधान की मूल वस्तु है | ऐसा सह-अस्तित्व ही होने का आधार है, जिसमें विकास क्रम, जागृति क्रम, विकास और जागृति समाहित रहता है | यह चारों भाग प्रकृति में देखने को मिलता है | इस धरती में जागृति के रूप में ही विकल्प को रखा है | विकल्प में पारंगत होने के पश्चात जागृति का प्रमाण होता ही है | पारंगत होने का मतलब अनुभवमूलक विधि से जी पाना |

अनुभव सह-अस्तित्व में ही होता है | सह-अस्तित्व छोड़कर और कहीं अनुभव होता नहीं | अनुभव का जिक्र आदर्शवादी करते हैं | अनुभव का प्रयोजन, अनुभव का विधि तय नहीं हुआ | इसीलिये विकल्प की आवश्यकता बनी | विकल्प ही जागृति का रास्ता है | यही जागृति तीन प्रमाणों के रूप में प्रमाणित होता है | प्रमाणों के रूप में अखण्डता, सार्वभौमता प्रमाणित होता है | अखण्डता, सार्वभौमता ही मानव परम्परा का जागृति परम है | इस क्रम में जागृत रहने की बात स्पष्ट होती है | भ्रमित और अपराधिकता में लिप्त रूप में जीना, जीवों से अच्छा जीने क्रम तक, जीवों से अच्छा जीते हुए, अच्छा क्या है? बुरा क्या है? इसका परिशीलन करता है | परिशीलन करने का अधिकार हर व्यक्ति में समाया है | यह क्रम से पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था के रूप में देखने को मिला है | यह विकल्प विधि से स्पष्ट हुआ | विकल्प को भले प्रकार से अध्ययन करने से प्रमाणित होना बनता है |

प्रमाण के मूल में अनुभव रहता ही है | अनुभव के मूल में सह-अस्तित्व रहता ही है | सहअस्तित्व ही अस्तित्व के रूप में प्रस्तुत है | इसीलिए यह संतुलित रहने की आवश्यकता है | यह तीनों अवस्था सुरक्षित रहना ही मानव का सुरक्षा है | इसका धारक वाहक अर्थात चारों अवस्था के संतुलन का धारक वाहक केवल मानव ही है | मानव अपने स्वयंस्फूर्त विधि से जीने लगता है | जागृति विधि से प्रमाणों को प्रस्तुत करता है | प्रमाण का स्वरूप सर्वोपरि समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में होता है; जिसको दिव्य मानव चेतना कहा है | दूसरा नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य बताया; यह प्रमाणित होता है | जागृति के प्रमाण में ही अनुभव सम्मत होना, अनुभव सम्मत विधि से विचार सम्मत होना पाया जाता है | इसी क्रम में मानव अपनी जागृति के महिमा स्वरूप अखण्डता, सार्वभौमता को पाता है | तीसरी विधि से मानव ही मानवीयतापूर्ण आचरण करते हुए कार्य-व्यवहार करता है | कार्य-व्यवहार रूप में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार होता है | इसे प्रमाणित किया, परिशीलन किया, अनुसंधान किया |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

\- ए. नागराज